International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.4, Issue-4(1), April, 2017
Impact Factor: 4.535; Email: drtvramana@yahoo.co.in

हीन्दी और तेलुगु की हाइकु कविता
भाषा और शिल्प

-डॉ.जे. विजया भारती
प्राध्यापिका
बि.वि.के. महाविद्यालय
विशाखपट्टणम

हाइकु छंद जापनी छंद विधा है । हिन्दी साहित्य जगत में यह मान्यता है कि द्वितीय महा विश्व युद्ध के पहले ही श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर जापान से हाइकु छंद लेआए और अपने "जापान यात्रा" नामक ग्रन्थ में उनके अनुवाद दिए और कहा कि यह संसार की सब से छोटी कविता है । उन्होंने हाइकु नामक शब्द का प्रयोग कहीं नहीं किया । चोका, सेदोका नामक शीर्षकों से उन्होंने जापनी कविताओं का अनुवाद किया । डॉ. भगक्तशरण अग्रवाल का कहना है कि "द्वितीय महायुद्ध के पश्चात जापान पर अमरीकी फौज का कब्जा हो जाने पर जापानी साहित्य का अध्ययन करने वाले किसी अमरीकी सैनिक, पत्रकार अथवा यात्री ने होक्कू को हाइकु कर डाला होगा ।" I, 10

तेलुगु में हाइकु छंद विधा १९९० से आरम्भ हुआ । हाइकु जापान के जैन व बौद्ध धर्म से तेलुगु में पदार्पित किया है । हाइकु छंद विधा विश्व के कई भाषाओं प्रविष्ठ हुआ । हिन्दी और गुजराती में अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिकतर हाइकु रचे गए । "हाइकु विधा को तेलुगु साहित्य में प्रविष्ठ कराने वाले हैं - गालि नासर रेड्डी, डॉ. पेन्ना शिव राम कृष्णा, इस्मायिल, बी.वी. प्रसाद ।" II, 317

तेलुगु के हाइकु कार पोन्ना शिवरामकृष्णा जी का कहना है कि "ध्यान के द्वारा मौन को, शब्द के द्वारा निःश्शब्द को और दृश्य के द्वारा अदृश्य को पकडना हाइकु में देखा जा सकता है ।" III "हाइकु की सर्जना में अन्तर्मुखी मानसिक प्रवृत्ति, सांसारिकता से विमुखता, शांत और निश्चल मन की एकाग्रता, क्षण में अनंत के दर्शन की शक्ति और अनुभूति तथा प्राकृतिक दृश्यों के प्रति अपार प्रेम चाहिए । उसकी रचनात्मक मानसिकता एक विशिष्ट प्रकार की है, जो बहिर्मुखता से अन्तर्मुखता की ओर अग्रसर होती है । हाइकु की सटीक परिभाषा है - आकाशं भूमि

नडुम जीवनदी

हैकु कविता - " III

हिन्दी में लगभग तीन सौ कवि इस समय हाइकु लिख रहे हैं और सौ से अधिक पत्र-पत्रिकाएँ उन्हें प्रकाशित कर रही है । अज्ञेय जी हिन्दी के सशक्त हाइकु कार माने जाते है । डॉ. भगवती शरण अग्रवाल, प्रो. आदित्य प्रताप सिंह, श्री रमेश कुमार त्रिपाठी, डॉ सुधा गुप्ता, डॉ शैल रस्तोगी आदिअन्य प्रमुख हाइकु कार हैं, जिन्होंने अपनी हाइकु कविता से हिन्दी के हाइकु कविता विधा को लोकप्रिय बनाने में समर्थ हुए हैं ।

हाइकु विधा का मुख्य नियम है, ५, ७, ५ अक्षर क्रम में त्रिपदी अतुकांत रचना । तुकांत भी हो सकता हैं । लेकिन ५, ७, ५ के क्रम में कुल १७ अक्षर होने चाहिए । भाव सौंदर्य की दृष्टि से कहीं कहीं अपवाद भी हो सकते हैं अर्थात इससे एकाध अक्षर कम या ज्यादा भी हो सकता हैं ।

५, ७, ५ के क्रम में १७ अक्षरों वाले हाइकु के उदाहरण :-

हिन्दी :- ये जानने में - ५
कुछ नहीं जानता - ७
जीवन बीता - ५ - डॉ. भगवती शरण अग्रवाल सबरस [I 12]

तेलुगु :- नीलि चीर पै - ५
अद्दिन चेमिकीलु - ७
नक्षत्रमुलु - ५ - डॉ. तलतोटि पृथ्वीराज [II, 319]

क्रम टूटने पर भी सुन्दर बनी हाइकु के उदाहरण -

हिन्दी :- उडी पतंग - ५
हा, वो काटा, थी वो - ६
मेरी उमंग - ५ - श्रीमती उर्मिला कौल, [I 93]

तेलुगु :- नल्लनि बुरखा - ६
स्त्री चुट्टू - ३
मुसिरिन चीकटि - ७ - आकोंडि श्रीनिवास राजाराव [II 321]

श्री अग्रवाल जी का कहना हैं कि हाइकु कविता को भाषागत लक्षणों संबंधी कसौटी पर कसना और काव्य शास्त्र की अभिधा, लक्षणा और व्यंजना शब्द

शक्तियों की अपेक्षा इन कविताओं में रखना व्यर्थ ही हैं । अलंकार भी हाइकु मे वर्ज्य माना गया है । क्योंकि हाइकू को सहज अभिव्यक्ति की अलंकार विहीन कविता कहा गाया है । फिर भी हमारी हिन्दी में अलंकारों की संख्या इतनी अधिक हैं कि किसी भी अभिव्यक्ति में कोई न कोई अलंकार आ ही जाता है ।

भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो अंग्रेजी, फारसी, संस्कृत आदि अन्य भाषा शब्दों का प्रयोग भी किया गया है । तेलुग और हिन्दी दोनों में ही हम यह विशिष्टता देख सकते हैं ।

हिन्दी - इन्फलेशन में
बैंक एकाऊन्ट के भी
पंख निकले । भगवीत शारण

तेलुगु - नाडु कोडुकु
हास्टल्लो नेडु तंड्रि
वृद्धाश्रमं लो

हिन्दी भाषा में कारक चिन्हों के कारण अक्षर बढ जाते हैं । इसलिए कई हाइकु कवियों ने और के स्थान पर औं और पर के स्थान पर पै का प्रयोग किया है । और हलका के स्थान पर हल्का और खुशबू के स्थान पर खुश्बू का प्रयोग कर अक्षर बचायें हैं ।

उदा - जो चाहा, लिखा
मन के कागज पै
तुमने, मैं ने - डॉ शैल रस्तोगी I 77

मन ने तुझे
कितने खत लिखे
औ फाड डाले - डॉ उर्मिला अग्रवाल I 129

तेलुगु और हिन्दी दोंनों ही भाषओं में दार्शनिकि, प्राकृतिक और सामाजिक आदि पक्षों को लेकर हाइकु लिख गाये हैं ।

दार्शनिक - मर जाऊँ तो ?
सभी को मरना है
निर्मम सत्य - डॉ. उर्मिला अग्रवाल I 129

पोंचि उंटोंदि
नीडल्ले मरणं
जीवं वेनुके - डॉ. तलतोटि पृथ्वीराज II 319

प्राकृतिक वर्षा के झोंके
बतियाते मेंढक
चाय - पकौडी - डॉ. भगवत शरण अग्रवाल I 106

ऊरंता निद्र
कप्पलु चिंनुकुला
संभाषणा - ललितानंद II 319

सामाजिक :- दहेज आग
हरा - भरा संसार
राख हो गया - डॉ सुधा गुप्ता I 59

कुल मतालु
मन्नुकु लेनि अंटु
मट्टि बोम्मकु - डॉ. तलतोटि पृथ्वीराज II 319

अतः इतनी छोटी छंद विधा हाइकु में अनेक तेलुगु और हिन्दी के हाइकु कार अपने सरल और सशक्त भाषा के माध्यम से जीवन के कई पहलुओं पर प्रकाश डालने का सराहनीय प्रयत्न कर रहे हैं । हाइकु कार कम शब्दों में अपनी बात को तीर के समान प्रयोग कर इसे २१ वी सदी की सर्व प्रचलित लोकप्रिय विधा बनाया हैं ।

संदर्भ सूची

१. हिन्दी कवयित्रियों की हाइकु साधना - डॉ भगवत शरण अग्रवाल
२. आधुनिक साहित्य विमर्श - प्रो वेलमल सिम्मन्ना
३. तेलुगु साहित्य सन्दर्भ और समीक्षा - डॉ एस.टी. नरसिंहचारी (४९८,४९९)